श्री धर्मनाथ विधान

रचयिता

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत

मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा० ब्र० संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री धर्मनाथ विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्रीविद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज का स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष 2023
संयोजक	:	बा० ब्र० संजय भैया, मुरैना
संस्करण	:	तृतीय, 1100 प्रतियाँ
सहयोग राशि	:	30/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्रकाशक	:	विद्या सुव्रत संघ
प्राप्ति स्थान	:	१. बा० ब्र० संजय भैयाजी, मुरैना Mob.-9425128817 २. अमर ग्रंथालय इंदौर, 9425478846 ३. अरिहंत जैन सागर, 8236060889
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बापू ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥

अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ 1॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ 2॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ 3॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ 4॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ 5॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ 6॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ 7॥

हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहंत फिर सिद्ध हम भी॥ 8 ॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥ 9 ॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(अवतार/लय–चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ्य चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री वृषभनाथ स्वामी अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (शंभु)

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥
अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।

ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य (शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य (आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य (सखी)

यह अर्घ्य चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥

जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ्य अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ्य चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सुव्रत दान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री धर्मनाथ विधान

जय बोलिये

धर्म के महास्तम्भ, धर्म धुरंधर,
धर्मात्माओं के प्राण हितंकर,
धर्म ध्वजा के धारी,
धर्मचक्र के अधिकारी,
धर्म तीर्थ प्रवर्तनकारी,
अनेक धर्म संस्कारी,
धर्म के मूल आधार,
धर्मोपदेश दातार,
धर्म के परमानन्द, धर्म के शंखनाद,
धर्म के ब्रह्मास्त्र, सर्वथा प्रशस्त
परमपूज्य
श्री धर्मनाथ भगवान् की जय॥

भजन

(लय : बाहुबली भगवान् .....)

धर्मनाथ भगवान् का, सबसे-प्यारा नाम।
धन्य-धन्य वे भक्त इन्हें जो, करते सदा प्रणाम॥
सबसे प्यारा नाम - यहाँ - सबसे प्यारा नाम...

धर्म बिना नहिं कोई जगत् में, धरती या आकाश।
धर्माश्रित ही पुण्य पाप हैं, धर्माश्रित संन्यास॥
धर्म बिना संसार चले ना।
धर्म बिना तो मोक्ष मिले ना॥
धर्म धुरंधर जिनसे बचकर, बने न कोई काम।
सबसे प्यारा नाम....॥ 1॥

ऐसी शान धर्म की जग में, पूजे सब संसार।
भले धर्म हैरान रहे पर, होती जय-जयकार॥
संकट बाधा कुछ भी आये।
किन्तु धर्म डिगने नहिं पाये॥
इसीलिए तो पद-पंकज में, मिले शांति आराम।
सबसे प्यारा नाम....॥ 2॥

जो सिद्धान्त धर्म के धारे, बाल न बाँका होय।
सब अरमान पूर्ण उसके हों, रोक सके नहिं कोय॥
वह बन जाता है मृत्युंजय।
अपराजित होती उसकी जय॥
तब ही 'सुव्रत' पाने आये, शुद्धातम जिनधाम।
सबसे प्यारा नाम....॥ 3॥

श्री धर्मनाथ विधान

स्थापना

धर्म सूर्य जब हो उदय, दिखता निज संन्यास।
धर्मनाथ को हो नमन, पाने ज्ञान प्रकाश॥

(गीतिका)

आप ही हो मात्र सुन्दर, आप ही अपने रहे।
आप ही हो मात्र साँचे, झूठ सब सपने रहे॥
आप तो लोकाग्र पर हो, भक्त क्यों हम दूर हैं।
चाहते हैं आपको पर, मिलन से मजबूर हैं॥

सात राजू उच्च स्वामी, वीतरागी नाथ हैं।
हम सरागी आप बिन तो, रोज-रोज अनाथ हैं॥
डोर श्रद्धा की हमारी, आप ही प्रभु थाम लो।
भाव भक्ति प्रार्थना सुन, भक्त पर कुछ ध्यान दो॥

हृदय हमारे आइये, धर्मनाथ भगवान्।
सादर तुम्हें प्रणाम कर, करते पूजन ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(पुष्पांजलिं....)

नीर श्रद्धा का लिया है, भक्ति के निज पात्र में।
ज्यों किया अर्पण तुम्हें तो, आत्म झलकी आप में॥
मैल मिथ्या पूर्ण धोने, जल हमें निज धाम दो।
जाप जप कर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं.....।

क्रोध ज्वाला से जला है, प्राणियों का चित्-सदन।
इस सदन में आ विराजो तो, खिले आतम वतन॥

आतमा की शांति पाने, भक्त पर प्रभु छाँव हो।
जाप जप कर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं.....।

रत्न हीरे मोति आदिक, तो नहीं हैं पास में।
क्या चढ़ायें जो हमें भी, टेर लें प्रभु पास में॥
आतमा अक्षय बनाने, धर्म का पद धाम दो।
जाप जप कर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्.....।

आतमा की पुष्प बगिया, आप तो महका रहे।
पंखुड़ी इक दो उसी की, क्यों हमें तड़पा रहे॥
मद के विजेता बन सकें हम, आप सम निष्काम हो।
जाप जप कर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं.....।

राग का ही स्वाद जाना, वीतरागी ना हुये।
खूब पुद्गल को चखा पर, भक्ति रस को ना छुये॥
स्वाद आतम का चखें बस, धर्म रस विज्ञान दो।
जाप जप कर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....।

आज तक तो था अँधेरा, सूझता ना कुछ भला।
मोह की काली घटा में, धर्म का दीपक जला॥
आरती करके तुम्हारी, आतमा का भान हो।
जाप जप कर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं.....।

गंध खिलती आत्म की तो, कर्म कीड़े भागते।
धूप प्रभु को सौंपते तो, भाग्य अपने जागते॥
गंध से निज गंध पाने, धर्म का बस नाम लो।
जाप जप कर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

आतमा क्वाँरी हमारी, भक्ति मंडप रिक्त है।
आपकी नजरें पड़ें तो, मुक्ति वरता भक्त है॥
भक्ति मंडप में पधारो, धर्म की फलमाल हो।
जाप जप कर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं.....।

देखने जग को दिखाने, अर्घ प्रभु को सौंपते।
धर्म बिन धर्मी कहा के, धर्म अपना झौंकते॥
हाय! दर्शन तज, प्रदर्शन, में फँसा संसार क्यों।
प्राप्त कर पर्याय दुर्लभ, कर रहा अपकार क्यों॥

धर्म को तज कर मिली है, शक्ति किसको बोलिए।
धर्म ही अंतिम शरण है, नयन अपने खोलिए॥
अर्घ श्रद्धा से चढ़ायें, धर्म से हर काम हो।
जाप जप कर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घ्यं.....।

पंचकल्याणक अर्घ्य

तेरस सुदि वैशाख को, त्याग अनुत्तर स्वर्ग।
धर्म हुये कल्याणमय, पाए सुप्रभा गर्भ॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लत्रयोदश्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

तेरस शुक्ला माघ को, जन्मी धार्मिक साँच।
भानुराज के आँगने, दिल-दिल घोड़ी नाँच॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जन्मोत्सव की धूम में, लखकर उल्कापात।
धर्मनाथ मुनि बन पुजे, भक्त हुये नत माथ॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लत्रयोदश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पौष पूर्णिमा को हरे, घाति कर्म संसार।
धर्म संत अर्हन्त को, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लपूर्णिमायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ज्येष्ठ चतुर्थी शुक्ल को, मोक्ष धर्म प्रभु पाए।
सुदत्त कूट शाश्वत गिरि, जिनको शीश नवाए॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लचतुर्थ्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जयमाला

अधर्म से ऊँचे उठे, छुये धर्म निज धाम।
यथा धर्म धर्मेश को, सादर रोज प्रणाम॥
मूलस्तंभ जो धर्म के, दिये धर्म सुखदान।
ऐसे धर्म जिनेश का, भक्त करें गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जय-जय धर्मनाथ धर्मेश्वर, जय-जय धर्म-पिता दाता।
जय-जय धर्म प्रचारक धर्मी, जय-जय धर्म-गुरु धाता॥
जय-जय धर्म धुरंधर धीरा, धर्म, धर्मपति विख्याता।
जय-जय धर्म तीर्थ के पालक,अपना कैसा है नाता॥ 1॥

जैसे नीरज का सूरज से, शिशु का माता से जैसे।
जैसे जीवों का साँसों से, मछली का जल से जैसे॥
जैसे खुशबू का फूलों से, पक्षी का नभ से जैसे।
जैसे आत्म ज्ञान दर्शन हैं, भक्त और भगवन् वैसे॥ 2॥

एक बड़े राजा दशरथ थे, भाग्य बुद्धि बल यशक्षेमी।
धर्म प्रजा पालक कल्याणी, प्रकृति उत्सव सुख प्रेमी॥
एक बार बैशाख पूर्णिमा, उत्सव से उल्लास बढ़े।
तभी देखकर चन्द्रग्रहण को, राजा कहीं उदास खड़े॥ 3॥

बने विरागी संयम धरकर, प्रकृति बाँधी तीर्थंकर।
समाधि कर सर्वार्थ सिद्धि में, बन अहमिन्द्र तजे सुरपुर॥
माता को सोलह सपने दे, गर्भ जन्म कल्याण हुये।
सुमेरु पर फिर स्वर्ण घटों से, क्षीर-नीर से न्हवन हुये॥ 4॥

कुमार काल पूर्ण भोगा फिर, राज्य अभ्युदय प्राप्त हुआ।
इक दिन उल्कापात दिखा तो, राजा को वैराग्य हुआ॥
काया माया नहीं हमारी, धर्म ज्ञान दर्शन अपने।
राज्य सुधर्म पुत्र को देकर, निकल पड़े तप से सजने॥ 5॥

हो आरूढ़ नागदत्ता से, चले शालवन दीक्षा ली।
ज्ञान मनःपर्यय उपजा फिर, अगले दिन मुनि भिक्षा ली॥
पाटलिपुत्र नगर के राजा, धन्यषेण तब धन्य हुये।
तभी प्रसिद्ध दानशासन के, पंचाश्चर्य प्रसन्न हुये॥ 6॥
एक वर्ष छदमस्थ बिताकर, सप्तच्छद तरुतल में जा।
बेला कर नक्षत्र पुष्य में, बने केवली लगी सभा॥
धर्मतीर्थ जो धर्म रहित था, किया धर्म दे अग्रेसर।
मुख्य आर्यिका रही सुव्रता, तेतालीस रहे गणधर॥ 7॥

धर्म देशना धर्म ध्वजा दे, किये विहार बन्द स्वामी।
श्रीसम्मेदशिखर पर जाकर, बन बैठे मासिक ध्यानी॥
आठ शतक नौ मुनियों के सह, धर्मनाथ प्रभु मोक्ष गये।
रहा पुष्य नक्षत्र जहाँ पर, मोक्षपर्व सब पूज रहे॥ 8॥

दशरथ नृप दस-रथों सरीखे, धर्म धार जिन बुद्ध बने।
धर्मनाथ बन धर्म-युद्ध कर , पाप कर्म हर शुद्ध बने॥
धर्मनाथ का केवल सुमरण, उलझन कष्ट कर्म हर ले।
रे! चेतन अब तनिक सोचकर, मन में तनिक धर्म धर ले॥9॥

तब बलभद्र सुदर्शन जन्मे, और पुरुषसिंह नारायण।
मघवा सनतकुमार चक्री भी, मधुक्रीड प्रतिनारायण॥
वहीं सनतकुमार चक्री जो, देवों से भी सुन्दर थे।
धर्म धार कर पाप नाश कर, चले मोक्ष के मंदिर थे॥ 10॥

उनको बुधग्रह में क्यों बाँधो, जो भू नभ में बँध न सके।
सबसे ऊँचे धर्म हमारे, मोह पंथ पै चल न सके॥
अतः अपने अनन्य भक्त को, अपना धर्म दिला दो ना।
श्रद्धालय से सिद्धालय में,'सुव्रत' को बुलवा लो ना॥ 11॥

(सोरठा)

वज्रदण्ड जिन चिह्न, धर्मनाथ प्रभु नाम है।
पन्द्रहवें धर्मेश, बारम्बार प्रणाम है॥
जब तक मिले न धर्म, चरण शरण हो आपकी।
फिर हर कर हर कर्म, करें शुद्धि निज आत्म की॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं.....।

धर्मनाथ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, धर्मनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

विधान अर्घ्यावली

(विष्णु) (तीन आत्म अवस्थाओं का वर्णन)

अनादिकाल से तन चेतन को, हमने एक गिना।
ये बहिरातम सुखी रहें क्या?, भेदविज्ञान बिना॥
नर-तन से पुद्गल के नर्तन, पूरे त्यागे तुम।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोस्तु हम॥ 1॥

ॐ ह्रीं बहिर्मुखी बहिरात्मभावविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जघन्य सम्यग्दृष्टी, मध्यम,-देशव्रती मुनिजन।
संत शुद्ध उपयोगी उत्तम, हैं अंतरआतम॥
अंदर बाहर के सारे भ्रम, पूरे त्यागे तुम।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोस्तु हम॥ 2॥

ॐ ह्रीं अंतर्मुखी अंतरात्माभावदायक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

संसारी अर्हंत सकर्मा, सकल-परम-आतम।
द्रव्य भाव नौ कर्म रहित शिव, निकल परम-आतम॥
कष्ट जाल जंजाल जगत् के, पूरे त्यागे तुम।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोस्तु हम॥ 3॥

ॐ ह्रीं निजरसलीनपरमात्माभावदायक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

(10 प्रकार के कल्पवृक्षों का वर्णन)

तुष्टि-पुष्टि कर मधुर पेय की, जो बत्तीसी दे।
कल्पवृक्ष पानांग जाति के, धर्म भक्ति ही दे॥
स्वानुभूति से पुद्गल के रस, पूरे त्यागे तुम।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोस्तु हम॥ 4॥

ॐ ह्रीं विषाक्तपररसनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

उत्तम वीणा झालर आदिक, जो वादित्र दिये।
कल्पवृक्ष तूर्यांग जाति के, साँचे धर्म दिये॥
निज-यन्त्रों से इन यन्त्रों को, पूरे त्यागे तुम।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोस्तु हम॥ 5॥

ॐ ह्रीं ध्वनिप्रदूषणनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

हार मुकुट कुण्डल आदिक जो, आभूषण देते।
कल्पवृक्ष वो भूषणांग हैं, धर्म भक्त लेते॥
निजभूषण से ये आभूषण, पूरे त्यागे तुम।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोस्तु हम॥ 6॥

ॐ ह्रीं आभूषणविकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ऊनी सूती तरह-तरह के, जो वस्त्रों को दें।
कल्पवृक्ष वस्त्रांग जाति के, धर्मी प्राप्त करें॥
बने दिगम्बर, वस्त्राडम्बर, पूरे त्यागे तुम।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोस्तु हम॥ 7॥

ॐ ह्रीं वस्त्राडम्बरविकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सुनो! पाँच सौ अस्सी विध का, जो देते भोजन।
कल्पवृक्ष वो भोजनांग हैं, पाते धर्मात्मन्॥
ज्ञानामृत से पुद्गल भोजन, पूरे त्यागे तुम।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोस्तु हम॥ 8॥

ॐ ह्रीं आहारविकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

स्वस्तिक नंद्यावर्त भवन जो, सोलह विध होवें।
कल्पवृक्ष वो आलयांग हैं, धार्मिक जन भोगें॥
निज मोक्षालय से भव-आलय, पूरे त्यागे तुम।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोस्तु हम॥ 9॥

ॐ ह्रीं भवनावासविकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

भवनों में फल फूलों जैसे, दीप दान जो दें।
कल्पवृक्ष दीपांग जाति के, धर्म शरण वो हैं॥
आत्म दीप से, जड़-ज्योति को, पूरे त्यागे तुम।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोस्तु हम॥ 10॥

ॐ ह्रीं प्रकाश दृष्टिविकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

रत्न स्वर्ण के बर्तन आसन, आदि दान करते।
कल्पवृक्ष वो भाजनांग हैं, धर्माश्रित रहते॥
निज में रमकर, बर्तन आसन, पूरे त्यागे तुम।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोस्तु हम॥ 11॥

ॐ ह्रीं बर्तन आसनविकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सोलह हजार विध पुष्पों की, जो दे मालाएँ।
कल्पवृक्ष मालांग जाति के, धर्म-दास पायें॥
मुक्ति-माल से ये मालाएँ, पूरे त्यागे तुम।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोस्तु हम॥12॥

ॐ ह्रीं पुष्पमालविकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

मध्यदिवस के कोटि सूर्यसम, सूर्य कांति हरते।
कल्पवृक्ष तेजांग जाति के, भक्त प्राप्त करते॥

निज स्वभाव से धूप छाँव को, पूरे त्यागे तुम।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोस्तु हम॥ 13॥

ॐ ह्रीं धूपछाँवविकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

(17 प्रकार का अयोग्य व्यापार त्याग)

चमड़ा हड्डी आदि वस्तु के, जो धंधे होते।
जैनों के वह योग्य नहीं हैं, धर्म रतन खोते॥
जग-व्यापार आपके जैसे, तजने दो निजधन।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोस्तु हम॥ 14॥

ॐ ह्रीं पशुहिंसा अत्याचारविकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

चमड़ादिक जूते चप्पल के, जो धंधे होते।
जैनों के वह योग्य नहीं हैं, धर्म रतन खोते॥
जग-व्यापार आपके जैसे, तजने दो निजधन।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोस्तु हम॥ 15॥

ॐ ह्रीं गमनागमनविकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

रेशम ऊनादिक वस्त्रों के, जो धंधे होते।
जैनों के वह योग्य नहीं हैं, धर्म रतन खोते॥
जग-व्यापार आपके जैसे तजने दो निजधन।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोस्तु हम॥ 16॥

ॐ ह्रीं वस्त्रविकृतिविकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

गाँजा अफीम आदि वस्तु के , जो धंधे होते।
जैनों के वह योग्य नहीं हैं, धर्म रतन खोते॥
जग-व्यापार आपके जैसे तजने दो निजधन।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोस्तु हम॥ 17॥

ॐ ह्रीं व्यसनविकृतिविकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

मद्य मांस मधु आदि वस्तु के, जो धंधे होते।
जैनों के वह योग्य नहीं हैं, धर्म रतन खोते॥

जग-व्यापार आपके जैसे तजने दो निजधन।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोस्तु हम॥ 18॥

ॐ ह्रीं समाजविकृतिविकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ईंट-कबेलू के भट्टों के, जो धंधे होते।
जैनों के वह योग्य नहीं हैं, धर्म रतन खोते॥
जग-व्यापार आपके जैसे तजने दो निजधन।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोस्तु हम॥ 19॥

ॐ ह्रीं अग्निविकृतिविकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जंगल वृक्ष जलाने वाले, जो धंधे होते।
जैनों के वह योग्य नहीं हैं, धर्म रतन खोते॥
जग-व्यापार आपके जैसे तजने दो निजधन।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोस्तु हम॥ 20॥

ॐ ह्रीं वन उपवनविकृतिविकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

खड्ग छुरी बंदूकादिक के, जो धंधे होते।
जैनों के वह योग्य नहीं हैं, धर्म रतन खोते॥
जग-व्यापार आपके जैसे तजने दो निजधन।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोस्तु हम॥ 21॥

ॐ ह्रीं आत्मरक्षाविकृतिविकल्प विनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

नाट्य सिनेमा नट आदिक के, जो धंधे होते।
जैनों के वह योग्य नहीं हैं, धर्म रतन खोते॥
जग-व्यापार आपके जैसे तजने दो निजधन।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोस्तु हम॥ 22॥

ॐ ह्रीं मनोरंजनविकृतिविकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

इत्र सेंट पुष्पादिक हिंसक, जो धंधे होते।
जैनों के वह योग्य नहीं हैं, धर्म रतन खोते॥
जग-व्यापार आपके जैसे तजने दो निजधन।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोस्तु हम॥ 23॥

ॐ ह्रीं शृंगारविकृतिविकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

लाख मोम के लेन देन के, जो धंधे होते।
जैनों के वह योग्य नहीं हैं, धर्म रतन खोते॥
जग-व्यापार आपके जैसे तजने दो निजधन।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोस्तु हम॥ 24॥

ॐ ह्रीं प्रदर्शनविकृतिविकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

हलवाई होटल आदिक के, जो धंधे होते।
जैनों के वह योग्य नहीं हैं, धर्म रतन खोते॥
जग-व्यापार आपके जैसे तजने दो निजधन।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोस्तु हम॥ 25॥

ॐ ह्रीं भोजनान्नविकृतिविकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

मील कारखाने यंत्रों के, जो धंधे होते।
जैनों के वह योग्य नहीं हैं, धर्म रतन खोते॥
जग-व्यापार आपके जैसे तजने दो निजधन।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोस्तु हम॥ 26॥

ॐ ह्रीं यंत्र मील विकृतिविकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पशु-बंधन पीडन ताडन के, जो धंधे होते।
जैनों के वह योग्य नहीं हैं, धर्म रतन खोते॥
जग-व्यापार आपके जैसे तजने दो निजधन।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोस्तु हम॥ 27॥

ॐ ह्रीं वध बंधनविकृतिविकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जंगल वृक्ष काटने वाले, जो धंधे होते।
जैनों के वह योग्य नहीं हैं, धर्म रतन खोते॥
जग-व्यापार आपके जैसे तजने दो निजधन।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोस्तु हम॥ 28॥

ॐ ह्रीं वृक्ष विकृतिविकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कुआ-ताल भू-खान खनन के, जो धंधे होते।
जैनों के वह योग्य नहीं हैं, धर्म रतन खोते॥
जग-व्यापार आपके जैसे तजने दो निजधन
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोस्तु हम॥ 29॥

ॐ ह्रीं प्राकृतिकविकृतिविकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सड़े घुने फल अन्नादिक के, जो धंधे होते।
जैनों के वह योग्य नहीं हैं, धर्म रतन खोते॥
जग-व्यापार आपके जैसे तजने दो निजधन।
धर्म सिद्धि को धर्मनाथ को, करें नमोस्तु हम॥ 30॥

ॐ ह्रीं कृषिविकृतिविकल्पविनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य

बहिरातम तज, अंतर आतम, तत्त्व ज्ञान पायें।
ज्ञाता दृष्टा चिन्मूरत बन, परमातम ध्यायें॥
किन्तु कल्पतरुओं के लालच, हमें न बहकायें।
वैभाविक व्यापार तजें सब, धर्म-गीत गायें॥

ये सब कार्य तभी होंगे जब, कृपा धर्म की हो।
क्षण में लोक शिखर छू लें जब, हानि कर्म की हो॥
मोक्ष महल तक बिन पंखों के, हम उड़ जायेंगे।
धर्म ढाल असि ले पापों से, हम लड़ जायेंगे॥

निज की निज में शक्ति प्रकट हो, कुछ ऐसा कर दो।
धर्म धर्म बस धर्म धर्म हो, बस ऐसा वर दो॥
धर्म भाव से ओत-प्रोत हो, करें अर्घ अर्पण।
धर्म सिद्धि को धर्म नाथ को, करें नमोस्तु हम॥

ॐ ह्रीं धर्मविकृतिविकल्प विनाशक श्रीधर्मनाथजिनेन्द्रायपूर्णार्घ्यं.....।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

धर्म बड़ा संसार में, ऋद्धि-सिद्धि दे दान।
धर्म पंथ को त्याग के, बनता कौन महान्॥
अतः धर्म की छाँव में, गुजरे सुबहो शाम।
तभी समुच्चय गीत के, पहले करें प्रणाम॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! धर्मनाथ की, धर्मतीर्थ की जय-जय हो।
कुछ भी कर लो किन्तु धर्म बिन, कभी न पापों का क्षय हो॥
मोह मार्ग या मोक्ष मार्ग हो, अथवा कैसी मुश्किल हो।
धर्म रहित, कुछ भी हल ना हो, ना ही कुछ भी हासिल हो॥1॥

ऐसा कोई द्रव्य नहीं जो, धर्म बिना परिणमन करे।
ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जो, धर्म बिना अवगहन करे॥
ऐसा कोई काल नहीं जो, धर्म बिना परिवर्तित हो।
ऐसा कोई भाव नहीं जो, धर्म बिना ही भावित हो॥ 2॥

तीन लोक में तीन काल में, सभी द्रव्य गुण पर्यायें।
बिना धर्म के रह ना सकतीं, कैसे धर्म भुला पाये॥
अब तक जितने सिद्ध बने या, पंच परम पद पाये हैं।
शुद्ध बुद्ध प्रतिबुद्ध बने जो, धर्म शरण में आये हैं॥ 3॥

तो फिर बोलो-धर्म-भक्ति बिन, क्या अपना मंगल होगा?
अतः धर्म करने से मंगल, आज नहीं तो कल होगा॥
पूज्य धर्म को भार न समझो, बहुत बड़ा उपहार यही।
पार करे उद्धार करे यह, कर दे जय-जयकार यही॥ 4॥

''धम्मो दया विसुद्धो'' वाली, हमें भावना भाना है।
''दंसण मूलो धम्मो'' प्यारा, मन मंदिर में लाना है॥

''चारित्तं खलु धम्मो'' अपने, जीवन में अपनाना है।
''वत्थु सहावो धम्मो'' धरकर, आत्म लक्ष्य को पाना है॥ 5॥

पूज्य ''अहिंसा परमो धर्मः'', सकल धर्म आधार कहा।
आतम जुदा जुदा है पुद्गल, सब धर्मों का सार रहा॥
तरह-तरह के भेद धर्म के, इसके ही विस्तार कहे।
धर्मनाथ जिनके समग्र को, नमोस्तु बारम्बार रहे॥ 6॥

सर्व सुखों की खान आप हैं, नहीं आप सम अन्य रहे।
दया अहिंसा संयम तप में, तिष्ठित जग से भिन्न रहे॥
सबके रक्षक आप दयालु, रक्षा करो हमारी भी।
सबकी सुनते एक बार अब, अर्जी सुनो हमारी भी॥ 7॥

हम अनादि से दुखिया जग में, आप बिना घबराते हैं।
पाप ताप संताप कष्ट भय, हमको खूब सताते हैं॥
भक्ति भावना ऐसी भर दो, आत्म मिले पुद्गल छूटे।
'सुव्रत' के बस दिल में रहिए,दुनियाँ रूठे तो रूठे॥ 8॥

(सोरठा)

धर्म धर्म की चाह, रोज भक्त हम चाहते।
देख धर्म की राह, शीश झुका हम पूजते॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय समुच्चयजयमालापूर्णार्घ्यं.....।

(दोहा)

धर्मनाथ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, धर्मनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

॥ इति श्री धर्मनाथविधान सम्पूर्णम्॥

प्रशस्ति

सिद्ध क्षेत्र अतिशय जहाँ, मूल पार्श्व भगवान्।
पूर्ण 'पवाजी' में हुआ, धर्मनाथ विधान॥
दो हजार चौदह गुरु, जनवरी नौ तारीख।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभ को नत शीश॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

बाजे छम्-छम् छूम्-छूम् छाम्, लाओ दीया बाती घ्राम्।
आओ धर्म प्रभु के धाम, कर लो आरती भजन प्रणाम॥

वीतराग प्रभु! धर्मनाथ जी, पन्द्रहवे जिन स्वामी। पन्द्रहवे....
भानुराज सुप्रभा मातु के, नंदन जग-कल्याणी। नन्दन....
करते आतम में विश्राम, बनते जिनसे सबके काम[2]
आओ धर्म प्रभु के........॥ 1॥

जब से ऊगा धर्म सूर्य तो, पाप अँधेरा भागा। पाप....
धर्म धुरन्दर के दर्शन से, भाग्य सितारा जागा। भाग्य....
होकर चिन्मय चेतन ग्राम, जिनसे उज्ज्वल सुबहो शाम[2]
आओ धर्म प्रभु के........॥ 2॥

धर्म कृपा है बड़ी निराली, कर्म बंध सब खोले। कर्म....
उसका होगा बाल न बाँका, जो इनकी जय बोले। जो....
छोड़ो यहाँ-वहाँ के काम, करिए पुण्य भरे शुभ काम[2]
आओ धर्म प्रभु के........॥ 3॥

हम भक्तों की सुनो प्रार्थना, अपना हमें बना लो। अपना....
धर्म अहिंसा शंख बजा के, अपने पास बुला लो। अपने....
'सुव्रत' भजें धर्म का नाम, पायें शुद्धातम शिव-धाम[2]
आओ धर्म प्रभु के........॥ 4॥